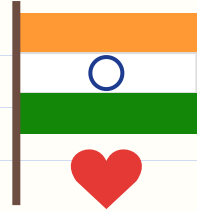


कक्षा 8 · हिंदी · 'मल्हार' (NCERT) · कविता

पाठ 1

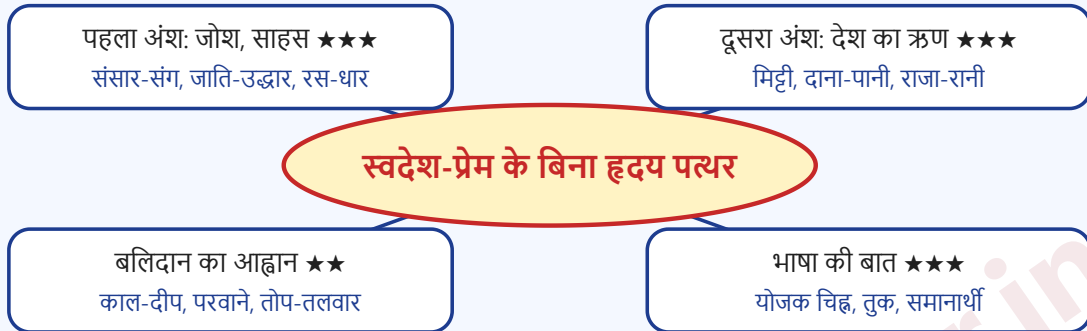
स्वदेश

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' · देश-प्रेम का आह्वान गीत · CBSE 2026-27



स्वदेश का प्यार

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण)



कवि परिचय

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (1883–1972) का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में हुआ। उन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना शुरू किया और फिर खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में स्थान बनाया। सरकारी नौकरी के कारण उन्हें दूसरा उपनाम 'त्रिशूल' रखना पड़ा। राष्ट्र-प्रेम के साथ उन्होंने किसान, मज़दूर और सामाजिक कुरीतियों पर भी कविताएँ लिखीं। प्रमुख रचनाएँ: त्रिशूल तरंग, राष्ट्रीय मंत्र, कृषक क्रंदन।

★ परीक्षा-सुझाव: परीक्षा में: 'वह हृदय नहीं है पत्थर है' का अर्थ (संवेदनहीनता), 'हम हैं जिसके राजा-रानी' (सभी नागरिक), 'भू का भार', 'काल-दीप... परवाने', योजक चिह्न और समानार्थी शब्द।

एक पंक्ति में: जिस हृदय में अपने देश के लिए प्रेम नहीं, वह हृदय नहीं, पत्थर है; जिस देश ने हमें पाला-पोसा, उसके लिए साहस और बलिदान ही सच्चा जीवन है।

1.1 कविता का भावार्थ ★★★

पहला अंश

‘वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। / जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं। / जो चल न सका संसार-संग, उसका होता संसार नहीं॥ / जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं। / जिससे न जाति-उद्धार हुआ, होगा उसका उद्धार नहीं॥ / जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस-धार नहीं। / वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥’

उत्तर: जिस हृदय में अपने देश के लिए प्रेम नहीं, वह **संवेदनहीन पत्थर** के समान है। जो व्यक्ति अपने भीतर और दूसरों में **जोश और उत्साह** नहीं जगा सका, उसका जीवन **सारहीन (निरर्थक)** है। जो समय और समाज के साथ (**संसार के संग**) नहीं चलता, संसार भी उसका साथ नहीं देता। जिसने **साहस** छोड़ दिया, वह कभी लक्ष्य तक (पार) नहीं पहुँच सकता। जिसने अपनी **जाति (देशवासियों/समाज)** का उद्धार नहीं किया, उसका भी उद्धार नहीं होगा। जिस हृदय में भावनाएँ नहीं, प्रेम का रस नहीं बहता, वह पत्थर है।

दूसरा अंश

‘जिसकी मिट्टी में उगे बड़े, पाया जिसमें दाना-पानी। / हैं माता-पिता बंधु जिसमें, हम हैं जिसके राजा-रानी॥ / जिसने कि खजाने खोले हैं, नव रत्न दिये हैं लासानी। / जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी॥ / उस पर है नहीं पसीजा जो, क्या है वह भू का भार नहीं।’

उत्तर: जिस देश की मिट्टी में हम जन्मे और बड़े हुए, जिसने हमें **अन्न-जल (दाना-पानी)** दिया, जहाँ हमारे माता-पिता और बंधु रहते हैं, और जिसके हम (सभी नागरिक) **राजा-रानी** हैं (लोकतंत्र में जनता ही स्वामी); जिसने **खजाने** खोलकर (प्राकृतिक संपदा, ज्ञान, संस्कृति) अनुपम (**लासानी**) रत्न दिए; जिस पर ज्ञानी भी मोहित हैं और सारी दुनिया दीवानी है: ऐसे देश के लिए जिसका हृदय नहीं **पसीजता** (द्रवित नहीं होता), वह धरती पर **बोझ (भू का भार)** है।

तीसरा अंश: बलिदान

‘निश्चित है निस्संशय निश्चित, है जान एक दिन जाने को। / है काल-दीप जलता हरदम, जल जाना है परवानों को॥ / सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं। / वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥’

उत्तर: यह **निश्चित, बिना किसी संदेह** के निश्चित है कि एक दिन प्राण जाने ही हैं। **काल (मृत्यु) रूपी दीपक** हर समय जल रहा है और **परवानों (पतंगों)** को उसमें जलना ही है: अतः मृत्यु से क्यों डरना? देश के लिए बलिदान देना ही श्रेष्ठ है। हमारे हाथों में सब कुछ है: क्या हमारे पास **तोप-तलवार** (साहस, इच्छाशक्ति, साधन) नहीं? (अवश्य हैं।)

1.2 काव्य-सौंदर्य ★★★

- **केंद्रीय भाव:** देश-प्रेम; यह एक **आह्वान गीत** है जो देशवासियों को जगाता है।
- **भाषा:** सरल खड़ी बोली; उर्दू शब्द: **लासानी** (अनुपम), **दीवानी, परवाना**; तत्सम: स्वदेश, निस्संशय, भू, काल-दीप।
- **टेक (दोहराव):** ‘वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं’ आरंभ और अंत में।
- **तुक:** नहीं / सार नहीं / संसार नहीं / पार नहीं; दाना-पानी / राजा-रानी / लासानी / दीवानी; जाने को / परवानों को।
- **अलंकार: रूपक:** ‘हृदय... पत्थर है’, ‘काल-दीप’, ‘रस-धार’; **अनुप्रास:** ‘जीवित जोश जगा’, ‘निश्चित है निस्संशय निश्चित’; **प्रश्न शैली:** ‘क्या है वह भू का भार नहीं’।
- **लय:** ‘है’ को पंक्ति के आरंभ में रखने से लय: ‘है जान एक दिन जाने को’ (गद्य में: ‘जान एक दिन जाने को है’)।

शब्दार्थ

स्वदेश = अपना देश; सार = तत्त्व, अर्थ; जाति-उद्धार = समाज/देशवासियों की उन्नति; रस-धार = प्रेम की धारा; दाना-पानी = अन्न-जल; लासानी = अनुपम, बेजोड़; पसीजना = द्रवित होना; भू = धरती; निस्संशय = बिना संदेह;

काल = मृत्यु; परवाना = पतंगा; पाहन/पाषाण = पत्थर।

पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' के अभ्यास, हल

मेरी समझ से

- उत्तर:** 1. **संवेदनहीनता से** (और कठोरता से): जिसमें देश के लिए भावना नहीं, वह हृदय पत्थर-सा भावहीन है।
 2. **देश के प्रति प्रेम:** टेक की पंक्ति ही मुख्य भाव बताती है।
 3. **देश के समस्त नागरिकों के लिए:** लोकतंत्र में सभी नागरिक देश के स्वामी हैं।
 4. **जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है।**

मिलकर करें मिलान

- उत्तर:** 1 → 3 (साहस छोड़ने वाला लक्ष्य नहीं पाता) · 2 → 4 (जो प्रेरित न कर सके, उसका जीवन निष्फल) · 3 → 1 (देश की ज्ञान-संपदा से विश्व प्रभावित) · 4 → 2 (साहस और इच्छाशक्ति ही तोप-तलवार)

पंक्तियों पर चर्चा

- उत्तर:** (क) मृत्यु निश्चित है; जैसे पतंगे दीपक पर जल जाते हैं, वैसे ही एक दिन सबको जाना है; तो क्यों न देश के लिए बलिदान देकर जीवन सार्थक करें। (ख) साहस, एकता और इच्छाशक्ति हमारे हाथ में हैं; यही हमारे हथियार हैं; पर देश-प्रेम के बिना सब व्यर्थ। (ग) जो हृदय भावनाओं और प्रेम-रस से खाली है, वह पत्थर के समान है।

सोच-विचार के लिए

- उत्तर:** (क) देश के सभी **नागरिकों** को, क्योंकि लोकतंत्र में शासन जनता का है, देश के स्वामी हम ही हैं। (ख) समय, समाज और प्रगति के साथ चलना; जो बदलाव और सहयोग से दूर रहता है, वह अकेला पड़ जाता है, इसलिए संसार उसका नहीं होता। (ग) जिस देश ने सब कुछ दिया, उसके लिए जिसका मन नहीं पिघलता, वह धरती पर बोझ है; उसका जीवन व्यर्थ है। (घ) अपने देश की मिट्टी, लोगों, संस्कृति से प्रेम; नियमों का पालन, ईमानदारी से काम, देश की संपदा और पर्यावरण की रक्षा, ज़रूरत पड़ने पर त्याग। (ङ) टेक का दोहराव, तुकांत पंक्तियाँ, लय और गेयता, ओजपूर्ण भाषा, प्रश्न शैली ('क्या है वह भू का भार नहीं'), रूपक ('काल-दीप')।

अनुमान और कल्पना से

- उत्तर:** (क) प्राकृतिक संपदा (खनिज, नदियाँ, वन, उपजाऊ भूमि), ज्ञान (वेद, योग, आयुर्वेद, गणित), कला और संस्कृति के खज़ाने। (ख) हम सब देशवासियों के लिए, क्योंकि हम इसी मिट्टी में जन्मे, पले-बढ़े, जैसे पौधे मिट्टी में उगते-बढ़ते हैं। (ग) पत्थर कठोर और भावहीन होता है; देश-प्रेम से रहित हृदय भी वैसा ही है। (घ) (नमूना) पत्थर: 'मैं पहाड़ से टूटकर नदी में आया, धारा ने मेरे नुकीले कोने घिस दिए...' मैं: 'तुम कितने धैर्यवान हो! तुमसे घर, मंदिर, सड़कें बनती हैं...' (ङ) नदियाँ, वन, वन्यजीव, जल, मिट्टी, ऐतिहासिक धरोहरें, भाषाएँ, लोक-कलाएँ: क्योंकि ये सीमित हैं, नष्ट हो रही हैं और आने वाली पीढ़ियों का अधिकार हैं।

कविता की रचना

- उत्तर:** (क) तुक से कविता में **लय, संगीत और याद रखने की सरलता** आती है। (ख) टेक का दोहराव, प्रश्न शैली, रूपक (काल-दीप, रस-धार), अनुप्रास, 'है' को पहले रखकर लय।

भाषा की बात

- उत्तर:** (क) **'स्वदेश' से जुड़े शब्द:** मातृभूमि, तिरंगा, राष्ट्रगान, देशभक्ति, स्वतंत्रता, सैनिक, संविधान, स्वदेशी, खादी, भारत माता।
(ख) योजक चिह्न: संसार-संग = संसार **के** संग; रस-धार = रस **की** धार; जाति-उद्धार = जाति **का** उद्धार; दाना-पानी = दाना **और** पानी; माता-पिता = माता और पिता; राजा-रानी = राजा और रानी।
(ग) 'है' पहले: 'हैं माता-पिता बंधु जिसमें' → 'जिसमें माता-पिता बंधु हैं'; 'है काल-दीप जलता हरदम' → 'काल-दीप हरदम जलता है'। नई पंक्ति: 'हैं ज्ञानी भी मरते जिस पर, है दुनिया जिस पर दीवानी': लय और गेयता बढ़ जाती है।

(घ) समानार्थी: भू = धरा, पृथ्वी · दीप = दीपक, प्रदीप · हृदय = दिल, जी · तलवार = असि, कृपाण · दुनिया = संसार, जग · पत्थर = पाहन, पाषाण

पाठ से आगे

उत्तर: स्वदेश-प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र: विद्यार्थी: कलम, ज्ञान, अनुशासन · अध्यापक: शिक्षा · कृषक: हल, परिश्रम · चिकित्सक: दवा, सेवा · वैज्ञानिक: खोज, प्रयोग · श्रमिक: श्रम, औज़ार · पत्रकार: सच्ची कलम।

तिरंगा: प्रसन्न जब हम सच बोलें, सफ़ाई रखें, किसी की मदद करें; उदास जब हम कचरा फैलाएँ, पानी बर्बाद करें, किसी का अपमान करें।

साझी समझ: 'स्वदेश' देश-प्रेम को साहस और बलिदान से जोड़ती है; 'खादी गीत' (सोहनलाल द्विवेदी) स्वदेशी खादी में अपनेपन, मान और अन्याय के विरोध को दिखाता है।

महत्वपूर्ण परीक्षा प्रश्न, पूरी तरह हल ★★★

A. पठित पद्यांश (5 × 1)

जिसकी मिट्टी में उगे बड़े, पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें, हम हैं जिसके राजा-रानी॥
जिसने कि खजाने खोले हैं, नव रत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी॥

- 'दाना-पानी' का अर्थ: (A) अनाज और नदी (B) अन्न-जल, पालन-पोषण (C) बीज (D) वर्षा
- 'हम हैं जिसके राजा-रानी' में 'हम': (A) राजा (B) देश के सभी नागरिक (C) कवि (D) सैनिक
- 'लासानी' का अर्थ: (A) अनुपम (B) साधारण (C) नकली (D) पुराना
- 'जिस पर है दुनिया दीवानी' का भाव: (A) दुनिया पागल है (B) सारा संसार भारत से प्रभावित है (C) दुनिया गरीब है (D) दुनिया दुखी है
- तुकांत शब्द-युग्म: (A) मिट्टी-बड़े (B) दाना-पानी, राजा-रानी (C) माता-पिता (D) ज्ञानी-खजाने

उत्तर: (i) (B) (ii) (B) (iii) (A) (iv) (B) (v) (B)

B. लघु उत्तरीय (2-3 अंक)

- कवि ने देश-प्रेम से रहित हृदय को पत्थर क्यों कहा है?

उत्तर: पत्थर कठोर, ठंडा और भावहीन होता है। जिस व्यक्ति के मन में उस देश के लिए भी प्रेम नहीं, जिसने उसे सब कुछ दिया, उसका हृदय भी संवेदनहीन है; इसलिए वह हृदय नहीं, पत्थर है।

- 'भू का भार' किसे कहा गया है?

उत्तर: जो व्यक्ति देश से अन्न-जल, परिवार, सम्मान सब पाकर भी उसके प्रति कृतज्ञ नहीं है, जिसका मन देश के लिए नहीं पसीजता, वह धरती पर बोझ है, उसका जीवन व्यर्थ है।

- 'है काल-दीप जलता हरदम, जल जाना है परवानों को' का आशय।

उत्तर: मृत्यु रूपी दीपक सदा जलता है और पतंगों की तरह सबको एक दिन उसमें जलना है; अतः मृत्यु से डरे बिना देश के लिए साहस और बलिदान से जीवन सार्थक करना चाहिए।

C. दीर्घ उत्तरीय (5 अंक)

- 'स्वदेश' कविता हमें किन गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती है? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर: (1) **देश-प्रेम:** 'वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं'। (2) **जोश और उत्साह:** 'जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं'। (3) **समय के साथ चलना:** 'जो चल न सका संसार-संग'। (4) **साहस:** 'जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं'। (5) **समाज-सेवा:** 'जिससे न जाति-उद्धार हुआ'। (6) **कृतज्ञता:** जिस देश ने दाना-पानी दिया, उसके प्रति आभार। (7) **निर्भयता और बलिदान:** 'है जान एक दिन जाने को'। कविता सिखाती है कि देश-प्रेम केवल भावना नहीं, कर्म भी है।

2. 'स्वदेश' को 'आह्वान गीत' क्यों कहा जाता है? इसकी भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: आह्वान गीत वह होता है जो लोगों को किसी कार्य के लिए पुकारे, जगाए। यह कविता स्वतंत्रता आंदोलन के समय देशवासियों को जोश, साहस और बलिदान के लिए पुकारती है; इसलिए आह्वान गीत है। **भाषा-शैली:** सरल, ओजपूर्ण खड़ी बोली; उर्दू-फ़ारसी शब्द (लासानी, दीवानी, परवाना); टेक का बार-बार प्रयोग; तुकांत पंक्तियाँ और गेयता; प्रश्न शैली; रूपक (काल-दीप, रस-धार) और अनुप्रास ('जीवित जोश जगा')।

★ **परीक्षा-सुझाव:** काव्य-पंक्ति के उत्तर में पहले अर्थ, फिर भाव/संदेश, फिर अलंकार या विशेषता लिखें।

अभ्यास सेट: स्वयं को परखें

A. रिक्त स्थान: 1. कवि का उपनाम 'सनेही' के अलावा _____ भी था। 2. जो चल न सका _____, उसका होता संसार नहीं। 3. जिसने _____ को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं। 4. नव रत्न दिये हैं _____। 5. है _____ जलता हरदम।

B. सही/गलत: 1. कवि का जन्म उन्नाव में हुआ। 2. कविता का मुख्य भाव देश की प्रगति है। 3. 'परवाना' का अर्थ पतंगा है। 4. कविता में टेक बार-बार आती है। 5. कवि ने आरंभ खड़ी बोली में किया।

C-G: 1. 'देश-प्रेम केवल सीमा पर नहीं' विषय पर अनुच्छेद। 2. 'स्वदेश' और 'खादी गीत' की तुलना। 3. तिरंगे को प्रसन्न करने वाले पाँच काम। 4. देश-प्रेम पर चार पंक्तियों की कविता। 5. किसी स्वतंत्रता सेनानी पर पाँच वाक्य।

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

- 'स्वदेश' कविता के कवि: (A) सोहनलाल द्विवेदी (B) मैथिलीशरण गुप्त (C) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (D) दिनकर
- कवि का जन्म: (A) उन्नाव (B) प्रयागराज (C) कानपुर (D) लखनऊ
- कवि का दूसरा उपनाम: (A) निराला (B) बच्चन (C) दिनकर (D) त्रिशूल
- हृदय पथर है, यदि उसमें नहीं: (A) धन (B) स्वदेश का प्यार (C) साहस (D) बुद्धि
- 'जो जीवित जोश जगा न सका', उस जीवन में: (A) सुख है (B) कुछ सार नहीं (C) धन है (D) यश है
- साहस छोड़ने वाला: (A) राजा बनेगा (B) सुखी होगा (C) धनी होगा (D) पार नहीं पहुँचेगा
- 'दाना-पानी' का अर्थ: (A) अन्न-जल (B) वर्षा (C) बीज (D) नदी
- 'हम हैं जिसके राजा-रानी' में 'हम': (A) कवि (B) राजा (C) देश के नागरिक (D) सैनिक
- 'लासानी' का अर्थ: (A) सस्ता (B) छोटा (C) पुराना (D) अनुपम
- 'भू का भार' कौन है? (A) सैनिक (B) जिसका मन देश के लिए न पसीजे (C) ज्ञानी (D) किसान
- 'निस्संशय' का अर्थ: (A) संशय सहित (B) डर (C) बिना संदेह (D) शायद
- 'काल-दीप' में अलंकार: (A) रूपक (B) यमक (C) उपमा (D) श्लेष
- 'परवाना' का अर्थ: (A) पत्र (B) पतंगा (C) परदा (D) पर्वत
- कविता का प्रकार: (A) शोक गीत (B) लोरी (C) आह्वान गीत (D) हास्य कविता
- 'संसार-संग' में चिह्न: (A) विराम (B) अल्पविराम (C) प्रश्नवाचक (D) योजक
- 'रस-धार' = रस ___ धार: (A) की (B) का (C) के (D) में
- 'हृदय' का समानार्थी: (A) जी (B) असि (C) दीप (D) धरा

18. 'तलवार' का समानार्थी:

(A) प्रदीप (B) पाहन (C) जग (D) कृपाण

20. कविता का मुख्य भाव:

(A) प्रकृति-प्रेम (B) भक्ति (C) देश-प्रेम (D) हास्य

19. 'जीवित जोश जगा' में अलंकार:

(A) रूपक (B) अनुप्रास (C) यमक (D) उपमा

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: देश-प्रेम से रहित हृदय पत्थर है। कारण: उसमें कोई भावना या संवेदना नहीं होती।
2. कथन: साहस छोड़ने वाला लक्ष्य तक नहीं पहुँचता। कारण: लक्ष्य पाने के लिए साहस आवश्यक है।
3. कथन: 'हम हैं जिसके राजा-रानी' में 'हम' केवल राजाओं के लिए है। कारण: लोकतंत्र में सभी नागरिक देश के स्वामी हैं।
4. कथन: कविता में लय है। कारण: 'है' शब्द पंक्ति के आरंभ में रखा गया है।
5. कथन: कवि का जन्म उन्नाव में हुआ। कारण: कविता में तुकांत शब्द हैं।
6. कथन: कवि मृत्यु से डरने को कहता है। कारण: 'है जान एक दिन जाने को'।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (A) · 5 (B) · 6 (D)

उत्तर: अभ्यास सेट

A. 1. त्रिशूल 2. संसार-संग 3. साहस 4. लासानी 5. काल-दीप

B. 1. सही 2. गलत (देश के प्रति प्रेम) 3. सही 4. सही 5. गलत (ब्रजभाषा में आरंभ)

C-G: 1. देश-प्रेम के रूप: ईमानदारी, स्वच्छता, नियम-पालन, पर्यावरण-रक्षा 2. दोनों स्वतंत्रता आंदोलन की; एक में साहस-बलिदान, दूसरी में स्वदेशी और अपनापन 3. सच बोलना, सफ़ाई, पानी बचाना, बड़ों का आदर, मेहनत 4-5. स्वयं लिखें।

- **अंतिम-रात सारांश:** गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (1883-1972), उन्नाव (उ.प्र.); उपनाम 'त्रिशूल'; ब्रजभाषा से खड़ी बोली; रचनाएँ: त्रिशूल तरंग, राष्ट्रीय मंत्र, कृषक क्रंदन।
- टेक: 'वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' = देश-प्रेम के बिना हृदय संवेदनहीन।
- जोश, संसार-संग, साहस, जाति-उद्धार, रस-धार; मिट्टी, दाना-पानी, 'हम हैं जिसके राजा-रानी' (सभी नागरिक); लासानी रत्न; 'भू का भार'।
- 'है जान एक दिन जाने को'; काल-दीप और परवाने; तोप-तलवार = साहस। आह्वान गीत।
- भाषा: योजक चिह्न (संसार के संग, रस की धार); तुक; समानार्थी: भू-धरा, हृदय-जी, तलवार-असि, पत्थर-पाषाण।